Indian J. Soc. & Pol. 05(01):159-160:2018 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

जलवायु परिवर्तन के कारण एवं प्रभाव

ओम प्रकाश यादव[a], शैलेन्द्र कुमार यादव[1b],
[a]असि.प्रोफेसर–भूगोल सतीश चन्द्र कालेज, बलिया, उ0प्र0,भारत
[b]सहा0प्रो0 भूगोल विभाग, हंडिया पी0जी0 कालेज हंडिया, इलाहाबाद, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

मौसम किसी भी स्थान की औसत जलवायु होती है जिसे कुछ समय के लिए ही वंहा अनुभव किया जाता है इस मौसम को तय करने वाले मानको में वर्षा,सूर्य का प्रकाश,नमी व तापमान प्रमुख है। जलवायु में परिवर्तन,मौसम में होने वाले परिवर्तन की तुलना में बहुत अधिक समय में होता है। यही कारण है की मौसम का परिवर्तन प्रतीत होता है। जबकि जलवायु परिवर्तन आसानी से प्रतीत नही होता है जनसंख्या में वृद्धि के साथ भोजन की मांग बढ़ती ही जा रही है जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पादन कम हो जाता है अत निकट भविष्य में खाद्य के क्षेत्र में खतरा बढ़ता दिखाई दे रहा है । यदि जलवायु परिवर्तन के वेग को रोका नहीं जायेगा तो पृथ्वी पर जीवन के लिए खतरा बढ़ जायेगा ।

KEY WORDS– जलवायु, वातावरण, जलवायु परिवर्तन

मानव जीवन में ही नही बल्कि पशु और पक्षियों के जीवन में भी जलवायु का महत्वपूर्ण स्थान है । सभी मानव इस जलवायु से परिचित होते है। और जो परिचित नही है वे इससे परिचित होने का प्रयास करते है। जलवायु विज्ञान,भौतिक भूगोल की एक महतवपूर्ण शाखा है,जिसके अंतर्गत व्यक्ति के चारो ओर के वायुमंडल का अध्ययन किया जाता है। वायुमंडल को व्यापक रूप से पर्यावरण के रूप में भी देखा जाता है, इसी पर्यावरण पर जिन तत्वों का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव पड़ता है, उसमे जलवायु प्रमुख है। जलवायु का तात्पर्य है, किसी स्थान के वातावरण की दशा को व्यक्त करना ।

हमें गर्मी के मौसम में गर्मी तथा सर्दी के मौसम में ठण्ड लगती है ये सब मौसम के परिवर्तन के परिणाम स्वरूप होता रहता है। मौसम किसी भी स्थान की औसत जलवायु होती है जिसे कुछ समय के लिए ही वंहा अनुभव किया जाता है इस मौसम को तय करने वाले मानको में वर्षा,सूर्य का प्रकाश,नमी व तापमान प्रमुख है। जलवायु में परिवर्तन,मौसम में होने वाले परिवर्तन की तुलना में बहुत अधिक समय में होता है, यही कारण है, की मौसम का परिवर्तन प्रतीत होता है, जबकि जलवायु परिवर्तन आसानी से प्रतीत नही होता है। विगत 150–200 वर्षो में इस जलवायु में परिवर्तन इतनी तीर्व गति से हुआ है, कि प्राणी और वनस्पति जगत को इस बदलाव के साथ सामंजस्य स्थापित करना कठिन हो रहा है, इसके लिए कहीं न कहीं मानवीय क्रिया कलाप ही जिम्मेदार है ।

जलवायु परिवर्तन के कारणः

जलवायु परिवर्तन के कारणों को मुख्य रूप से निम्लिखित दो भागों में बाटा जा सकता है।

1. प्राकृतिक कारण
2. मानवीय कारण

1– प्राकृतिक कारणः जलवायु परिवर्तन के लिए अनेक प्रकार के प्राकृतिक कारण उत्तरदायी है जो निम्लिखित है,

A– महाद्वीप का खिसकना–समुद्रो के अन्दर पाये जाने वाले महाद्वीप,पृथ्वी के साथ ही उत्पन्न हुए है जो समुद्र में तैरते रहने के कारण और वायु के प्रवाह के कारण ये खिसकते रहते है जिससे समुंद्र में हलचल या तरंगे होती है जो जलवायु परिवर्तन में सहायक होती है ।

B– ज्वालामुखी–जब भी किसी ज्वालामुखी में विस्फोट होता है, तो पर्याप्त मात्रा में सल्फर डाई आक्साइड, पानी,धूल के कण और राख का उत्सर्जन होता है फलस्वरूप वातावरण प्रभावित होता है ।

C– पृथ्वी का झुकाव–पृथ्वी अपने अक्ष पर 23.5 डिग्री झुकी हुई है, जिससे मौसम में परिवर्तन होता रहता है अधिक झुकाव से अधिक सर्दी व अधिक गर्मी प्रतीत होती है।

D– समुंद्री तरंग–समुद्र जलवायु का एक प्रमुख अंग है जो पृथ्वी के लगभग 71 प्रतिशत भाग पर फैला हुआ है। पृथ्वी की सतह की अपेक्षा दो गुना दर से पानी सूर्य की किरणों को अवशोषित करता है, इसलिए ऊष्मा का प्रसार अधिक होता है।

2–मानवीय कारण–पृथ्वी द्वारा सूर्य से प्राप्त ऊष्मा का लगभग 30% भाग वातावरण में अवशोषित हो जाता है, शेष का कुछ भाग धरा द्वारा अवशोषित होता है, और शेष परावर्तित होकर पुनः वातावरण में चला जाता है, जिसका कुछ भाग वातावरण में

1: Corresponding Author

उपस्थित कार्बन डाई आक्साइड, मीथेन,नाइट्रस आक्साइड व जल कण अवशोषित कर लेते है। इन गैसों को ग्रीन हाउस गैसे भी कहते है, ग्रीन हाउस प्रभाव को सर्वप्रथम फ्रांस के वैज्ञानिक जीन बैप्टिस्ट फुरियन ने पहचाना इन्होंने ग्रीन हाउस व वातावरण में होने वाले सम्बन्धो को दर्शाया है, ग्रीन हाउस गैसों की परत पृथ्वी पर इसकी उत्पती के समय से है। खेती के कार्यो में वृद्धि,जमीन के उपयोग में विभिन्नता व अन्य कई कारणों से वातावरण में मीथेन व नाइट्रस आक्साइड गैसों का स्राव बढ़ जाता है। इस परिवर्तन से सामान्यतरू वैश्विक तापन या जलवायु में परिवर्तन दिखाई पड़ते है ।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव :

जलवायु परिवर्तन से मानव जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जो निम्न लिखित क्षेत्रो में देखा जा सकता है :

खेती :

जनसंख्या में वृद्धि के साथ भोजन की मांग बढ़ती ही जा रही है जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पादन कम हो जाता है अत निकट भविष्य में खाद्य के क्षेत्र में खतरा बढ़ता दिखाई दे रहा है ।

मौसम :

मौसम से वर्षा का चक्र प्रभावित होता है, जिससे बाढ़ या सुखा होने का खतरा उत्पन्न हो जाता है ग्लेशियर के पिघलने से समुद्र का जलस्तर भी बढ़ रहा है।

स्वास्थ्य :

वैश्विक ताप का मानवीय स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है, जिससे गर्मी के दिनों में संक्रमित बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है।

जंगल व वन्य जीव :

सभी जीवधारी प्राकृतिक वातावरण में रहते है, जो जलवायु परिवर्तन के प्रति काफी संवेदन शील होते है, यदि जलवायु परिवर्तन का क्रम इसी प्रकार चलता रहा तो पृथ्वी पर जल्दी ही अनेक पशु पक्षी का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा ।

सुरक्षात्मक उपाय :

प्रकृति में परिवर्तन के बुरे प्रभाव से बचने के लिए निम्न लिखित प्रयास किये जा सकते है :

1 जीवाश्म इंधन के उपयोग में कमी की जाये

2 प्राकृतिक उर्जा के स्रोत (सौर उर्जा , पवन उर्जा आदि को) अपनाया जाये

3 पेंड़ो को बचाया जाये और अधिक वृक्षारोपण किया जाये

4 प्लास्टिक का उपयोग व प्रयोग बंद किया जाये

5 भौतिक सुविधाओ के उपभोग से बचा जाये जा कम से कम किया जाये

निष्कर्ष

यदि जलवायु परिवर्तन के वेग को रोका नहीं जायेगा तो पृथ्वी पर जीवन के लिए खतरा बढ़ जायेगा । हमें इसके लिए अपनी सोंच और दृष्टिकोण बदलना होगा अन्यथा हम अपनी आने वाली पीढ़ी को केवल समस्याए ही देकर चले जायेंगे।

सन्दर्भ

गौतम, डॉ शिवानन्द व डॉ सतेंद्रनाथ यादव (2009) *"जलवायु एवं समुद्र विज्ञान*

गौतम, डॉ अलका (2010) *जलवायु एवं समुद्र विज्ञान*

राव, ए.सूर्यचंद्र एवं अन्य (2010) *"अनयुजुवल सेंट्रल इण्डियन ड्राउट आफ समर मानसून"*

जायसवाल, नितेश व अन्य (2009) *"पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी"*

.हैनसन, जे (2011) *"पर्सेप्सन आफ क्लाइमेट चेंज"*